ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

हिंदी ऑनलाइन कक्षा

कक्षा - आठवीं

विषय – हिंदी

पाठ : ४

पाठ का नाम : कर्ण का मित्र प्रेम

PPT-1

कवि परिचय

रामधारी सिंह "दिनकर"

कवि परिचय

रामधारी सिंह 'दिनकर' (सन् 1908-1974) राष्ट्रीय कवि के रूप में लोकप्रिय हैं। इनका जन्म बिहार के मुँगेर जिले के सिमरिया नामक गाँव में हुआ। इन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भाग लिया था। दिनकर का काव्य सामाजिकता तथा राष्ट्रीयता से परिपूर्ण है। इनके काव्य का प्रमुख स्वर क्रांति का है। अपने काव्य द्वारा इन्होंने समाज को प्रगति और निर्माण के पथ पर आगे बढ़ाने का संदेश दिया। *रेणुका, हुंकार, रसवंती, कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, उर्वशी* आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। दिनकर जी ने उच्चकोटि का गद्य भी लिखा है। इनके 'संस्कृति के चार अध्याय' नामक ग्रंथ को साहित्य अकादमी ने पुरस्कृत किया है। 'उर्वशी' नामक ग्रंथ पर इन्हें 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है।

रामधारी सिंह दिनकर

२३ सितम्बर १९०८ – २४ अप्रैल १९७४

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

कर्ण का मित्र प्रेम

"हे कृष्ण ! ज़रा यह भी सुनिए,
सच है की झूठ मन में गुनिये
धूलों में मैं था पडा हुआ,
किसका सनेह पा बड़ा हुआ?
किसने मुझको सम्मान दिया,
नृपता दे महिमावान किया?

"है ऋणी कर्ण का रोम-रोम,
जानते सत्य यह सूर्य-सोम
तन मन धन दुर्योधन का है,
यह जीवन दुर्योधन का है
सुर पुर से भी मुख मोड़ूँगा,
केशव ! मैं उसे न छोड़ूंगा

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

"जिस नर की बाह गही मैने,
जिस तरु की छाँह गहि मैने,
उस पर न वार चलने दूँगा,
कैसे कुठार चलने दूँगा,
जीते जी उसे बचाऊँगा,
या आप स्वयं कट जाऊँगा,

"मित्रता बड़ा अनमोल रतन,
कब उसे तोल सकता है धन?
धरती की तो है क्या बिसात?
आ जाय अगर बैकुंठ हाथ.
उसको भी न्योछावर कर दूँ,
कुरूपति के चरणों में धर दूँ.

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

शब्दार्थ

गुनिए = सोचना , विचार करना ।
सनेह = स्नेह, प्रेम ।
ऋणी = कर्जदार ।
सोम = चंद्र ।
सुरपुर = स्वर्ग ।
नर = पुरूष ।
गही = पकड़ना ।
तरू = वृक्ष, पेड़ ।
छाँह = छाँव ।
वार = प्रहार, आघात ।
कुठार = कुल्हाड़ी ।
अनमोल = अमूल्य,जिसका मूल्य आँका न जा सके।
रतन = रत्न ।
बिसात = हस्ती, शक्ति, सामर्थ्य ।
न्योछावर = अर्पित, कुर्बान ।
कुरूपति = कुरूवंश के स्वामी अर्थात दुर्योधन ।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

पाठ का सार

इस कविता में कवि ने संसार की सभी उपलब्धियों को मित्र-धर्म के पालन की तुलना में नगण्य बताया है। महाभारत में कर्ण की बहादुरी एवं शौर्य के कारण श्रीकृष्ण स्वयं आकर कर्ण से कहने लगे कि तुम पांडवों के भाई हो तुम उन्हीं की ओर से युद्ध करो । यह न्याय संगत है , परंतु श्रीकृष्ण की बातों से कर्ण जरा-सा भी विचलित नहीं हुआ एवं श्रीकृष्ण की बातों को सुनने के बाद बोला कि मैं तो विवशतापूर्ण जीवन जीव व्यतीत करने के लिए विवश था । दुर्योधन ने ही मेरा हाथ थामा और एक राजा की तरह मुझे सम्मान दिया । सूर्य और चंद्रमा भी इस बात के प्रमाण हैं । दुर्योधन के प्रति अपनी कृतज्ञता को व्यक्त करते हुए कर्ण ने कहा - कि मेरा रोम -रोम दुर्योधन का ऋणी है । मैं स्वर्ग छोड़ सकता हूँ, परंतु दुर्योधन को नहीं । जिसने मुझे सहारा दिया है , मेरी सुरक्षा की है अपने प्राण देकर भी मैं उसे बचाऊँगा । मित्रता एक ऐसा रत्न है जिसका मूल्य आँका नहीं जा सकता । कर्ण ने मित्रता को महत्व देते हुए श्रीकृष्ण से कहा - कि ज़मीन की बात तो छोड़ दीजिए । यदि स्वर्गलोक भी मुझे मिल जाए तो उसे भी मैं दुर्योधन के चरणों में समर्पित कर दूँगा । इस पाठ में कवि ने कर्ण के मित्र के प्रति अटल प्रेम को व्यक्त किया है।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

सामान्य उद्देश्य –

छात्रों को सीख देना कि किसी के द्वारा किए गए उपकार को समझ सके और सदैव अपने कर्तव्य का पालन करने के लिए तैयार रहे।

विशिष्ट उद्देश्य –

बच्चों में मानवीय गुणों का विकास करना।
बच्चों को किसी भी स्थिति में लोभ व स्वार्थ के वशीभूत होकर कोई गलत कार्य न करने तथा मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रखने के लिए प्रेरित करना।
बच्चों में अपने मित्र या स्वामी के प्रति पूर्ण निष्ठा का भाव रखने की भावना जागृत करना।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

THANKING YOU

ODM EDUCATIONAL GROUP

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow